

हरियाणा की वास्तुकला एवं आंतरिक सजा: हरियाणवी सांस्कृतिक जीवन का प्रतिबिंब एवं उसका महत्व

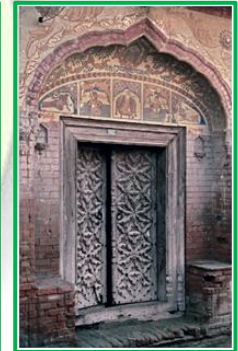
*यानू पूनिया एवं प्रोमिला के चहल

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा

*संवादी लेखक का ईमेल पता: yanupoonia03@gmail.com

हरियाणा भारत का एक प्रमुख राज्य है, जिसकी सांस्कृतिक विरासत सरलता, सादगी और परंपराओं से परिपूर्ण है। यहाँ की वास्तुकला (Architecture) और आंतरिक सजा (Interior Design) न केवल भौतिक संरचनाओं का निर्माण करती हैं, बल्कि यह हरियाणवी जीवनशैली, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक मूल्यों का जीवंत चित्रण भी प्रस्तुत करती हैं। ग्रामीण हरियाणा में घरों की बनावट, आँगन की व्यवस्था, दीवारों की सजावट और उपयोग में आने वाली वस्तुएँ—ये सभी स्थानीय जलवायु, संसाधनों और सांस्कृतिक परंपराओं के अनुरूप विकसित हुई हैं। इस प्रकार, हरियाणा की वास्तुकला एवं आंतरिक सजा एक समृद्ध सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती है।

हरियाणा की पारंपरिक वास्तुकला (Traditional Architecture of Haryana)



1. आँगन युक्त घर (Courtyard Houses)

हरियाणा के पारंपरिक घरों की सबसे प्रमुख विशेषता आँगन (Courtyard) होती है। यह घर का केंद्रीय भाग होता है, जहाँ परिवार के सदस्य एकत्रित होते हैं।

- यह सामाजिक मेल-जोल का केंद्र होता है
- प्राकृतिक प्रकाश और वेंटिलेशन का मुख्य स्रोत होता है
- घरेलू कार्यों का संचालन यहीं से होता है

2. स्थानीय सामग्री का उपयोग

हरियाणा में घरों के निर्माण में स्थानीय संसाधनों का उपयोग प्रमुख रूप से किया जाता है, जैसे:

- मिट्टी (Mud)
- ईंट (Bricks)
- लकड़ी (Wood)

• चूना (Lime)

ये सामग्री न केवल किफायती होती है, बल्कि जलवायु के अनुकूल भी होती है, जिससे घरों में तापमान संतुलित रहता है।

3. मोटी दीवारें एवं ऊँची छतें

गर्मी से बचाव के लिए घरों की दीवारें मोटी और छतें ऊँची बनाई जाती हैं। इससे घर के अंदर ठंडक बनी रहती है।

4. चौपाल एवं खुला स्थान

गाँवों में चौपाल एक महत्वपूर्ण सामाजिक स्थल होता है, जहाँ लोग एकत्र होकर चर्चा करते हैं। यह हरियाणवी सामुदायिक जीवन का प्रतीक है।

5. हवेलियाँ और पारंपरिक भवन

समृद्ध परिवारों में हवेलियाँ भी देखने को मिलती हैं, जिनमें सुंदर नक्काशीदार दरवाजे, खिड़कियाँ और आँगन होते हैं। ये भवन पारंपरिक कला और शिल्प का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

हरियाणा की आंतरिक सजा (Interior Design of Haryana)



1. दीवारों की सजावट

हरियाणा में दीवारों पर पारंपरिक चित्रकारी, जैसे मंडना कला, की जाती है। यह कला धार्मिक और सांस्कृतिक भावनाओं को व्यक्त करती है।

2. फर्नीचर एवं घरेलू वस्तुएँ

- चारपाई (Charpai)
- लकड़ी के संदूक
- पीढा (Low stool)

ये सभी वस्तुएँ सरल, उपयोगी और स्थानीय शिल्प पर आधारित होती हैं।

3. पारंपरिक बर्तन और सजावट

पीतल और तांबे के बर्तन न केवल उपयोग के लिए बल्कि सजावट के लिए भी रखे जाते हैं। यह घर की सुंदरता को बढ़ाते हैं।

4. वस्त्र एवं हस्तशिल्प का उपयोग

- रंगीन दरी (Durries)
- कढ़ाईदार कपड़े
- हस्तनिर्मित परदे

ये सभी वस्तुएँ हरियाणवी संस्कृति की झलक प्रस्तुत करती हैं।

5. रंगों का प्रयोग

हल्के और प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है, जो शांति और सादगी को दर्शाते हैं।

हरियाणवी सांस्कृतिक जीवन का प्रतिबिंब

हरियाणा की वास्तुकला और आंतरिक सजा में यहाँ के सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलू स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं:

- सामूहिकता (Collectivism): आँगन और चौपाल सामूहिक जीवन को दर्शाते हैं
- सरलता (Simplicity): सादा और कार्यात्मक डिजाइन
- परंपराओं का सम्मान: धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग
- प्रकृति से जुड़ाव: प्राकृतिक सामग्री और पर्यावरण अनुकूल निर्माण

महत्व (Significance of Haryana Architecture & Interior Design)

1. सांस्कृतिक संरक्षण

यह परंपरागत वास्तुकला और सज्जा हरियाणा की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित रखती है।

2. पर्यावरणीय अनुकूलता

स्थानीय सामग्री और डिजाइन जलवायु के अनुकूल होते हैं, जिससे ऊर्जा की बचत होती है।

3. सामाजिक एकता को बढ़ावा

आँगन और चौपाल सामाजिक संबंधों को मजबूत करते हैं।

4. आर्थिक दृष्टि से लाभकारी

स्थानीय संसाधनों का उपयोग लागत को कम करता है।

5. आधुनिक डिजाइन के लिए प्रेरणा

आज के इंटीरियर डिजाइन में भी पारंपरिक तत्वों को अपनाकर sustainable design विकसित किया जा सकता है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन

आज शहरीकरण और आधुनिकता के प्रभाव से हरियाणा की पारंपरिक वास्तुकला में बदलाव आ रहा है।

- आँगन की जगह फ्लैट्स और अपार्टमेंट्स ने ले ली है
- पारंपरिक सामग्री की जगह आधुनिक सामग्री (cement, steel) का उपयोग बढ़ गया है
- फिर भी, कई लोग आधुनिक घरों में पारंपरिक तत्वों को शामिल कर रहे हैं

निष्कर्ष

हरियाणा की वास्तुकला और आंतरिक सज्जा केवल रहने की व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह वहाँ की सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक संरचना और जीवनशैली का प्रतिबिंब है। आधुनिकता के इस दौर में इन पारंपरिक तत्वों को संरक्षित रखना अत्यंत आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी रहें।